प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फार्म मशीनरी एवं पावर इन्जीनियरिंग विभाग की ओर से एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना ए.आई.सी.आर.पी. आन ई.ए.ए.आई. के अन्तर्गत एक–दिवसीय किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन फार्म मशीनरी एवं पावर इन्जीनियरिंग विभाग में किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राध्यापक एवं पी.आई. डा. आर.एन. पटैरिया द्वारा ग्राम–सूर्या गाँव, ब्लाक–भीमताल, जिला–नैनीताल में किया गया। अनुसूचित श्रेणी के लगभग 25 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चीड़ की पत्तियों से बायोचार बनाकर इसकी ब्रिकेट बनाने का प्रशिक्षण दिया गया जिससे भविष्य में किसानों के लिए एक नव रोजगार उपलब्ध कराया जा सकें एवं किसानों की आय में बृद्वि हो। यह ब्रिकेट न केवल चीड की पत्तियों के जंगल के आग को कम करने में सहायक है बल्कि इसके साथ–साथ पर्यावरण हितैशी भी है। चीड़ की पत्तियों और अन्य उपलब्ध बायोमास से चार बनाकर इस चार से ब्रिकेट बनाकर लकड़ी का आग का विकल्प तैयार किया जा सकता है। खास बात यह है कि इसमें बिजली के उपयोग का कोई भी जरूरत नहीं है और यह जलने के दौरान धुआ नही देगा। ऐसे बनेगी ब्रिकेट– कृषि यंत्र व प्रक्षेत्र अभियांत्रिकी विभाग के प्राध्यापक डा. राज नारायण पटैरिया ने बताया कि बायोचार यंत्र में चीड़ की पत्तियों या खतपतवार 50 से 60 फीसदी ही जलाया जाता है फिर दूसरी खेफ डाल दी जाती है। जबतक पूरा यंत्र भर जाए खपतवार को इसी प्रतिशत में जलाया जाता है इसके बाद ढक्कन को कीचड़ से पैक कर दिया जाता है इसके बाद कोल पावडर यानी बायोचार निकलता है इसमें पानी, चिकनी मिट्टी और गोबर मिलाके इसका पेस्ट बनाया जाता है। यह होगा फायदा:–यह ईधन की लकड़ी के लिए पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों की मेहनत को कम करेगी। साथ ही जंगलों में आग के खतरों को भी कम करेगी। इससे दूरस्त पर्वतीय क्षेत्रों के ग्रामीणों की ईधन के लिए लकड़ी पर निर्भरता कम होगी और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी। सूर्या गांव के उक्त किसानों को प्रशिक्षण के बाद बायोचार यंत्र तथा ब्रिकेटिंग मशीन निःशुल्क परियोजना के अन्तर्गत प्रदान की गयी।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ अधिकारीगण।

निदेशक संचार